अचानक धनवान बनना

कैलिफोर्निया में सोने की खोज की कहानी

स्टीफन करेन्सकी

चित्र: अन्ना डीविटो

अचानक धनवान बनना

कैलिफोर्निया में सोने की खोज की कहानी

अचानक धनवान बनना

कैलिफोर्निया में सोने की खोज की कहानी

स्टीफन करेन्सकी

चित्र: अन्ना डीविटो
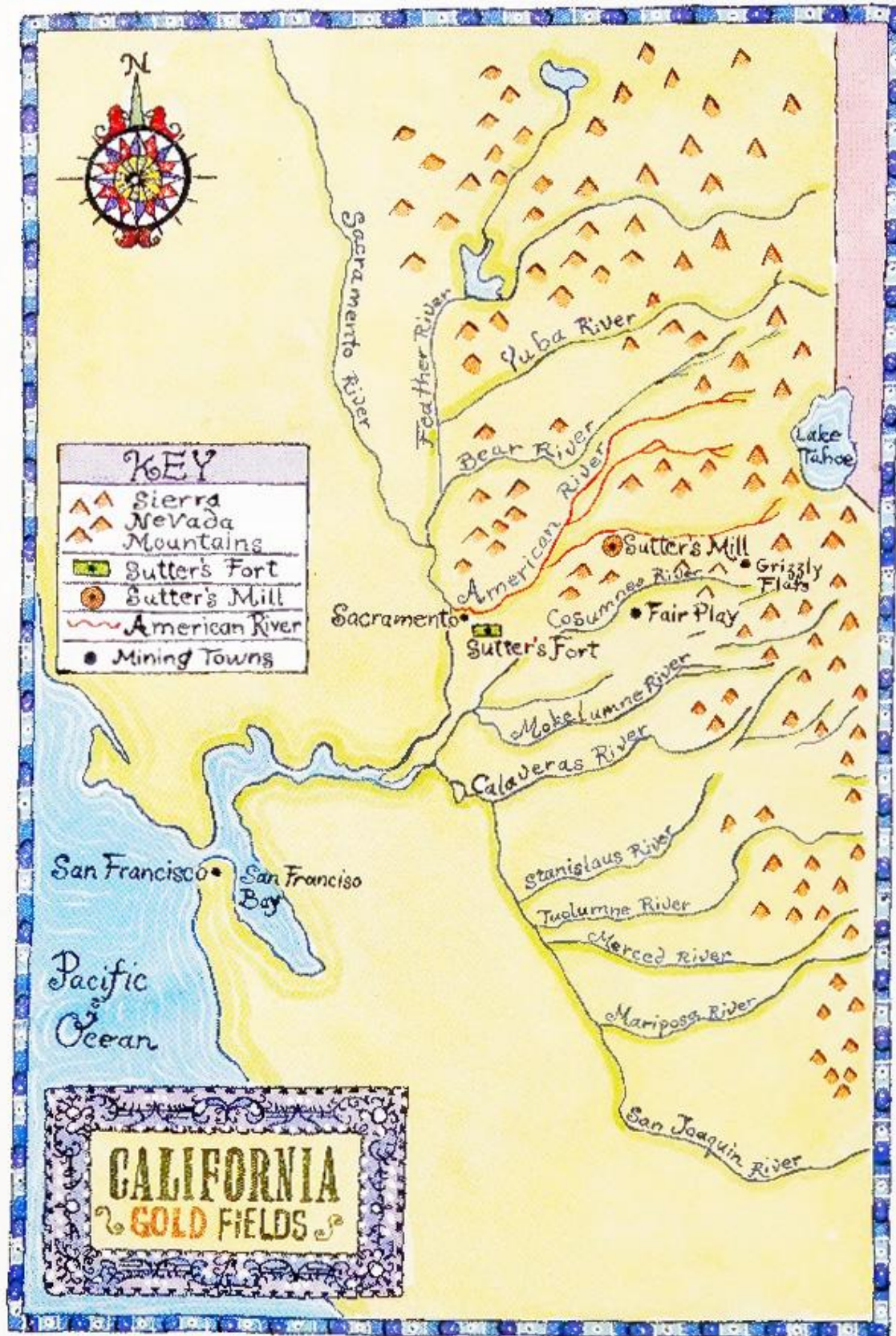
1

समाचार का पूर्व की ओर जाना

सोना!

अगर यह समाचार सत्य था तो यह एक बड़ा समाचार था-लेकिन क्या यह सत्य था? सैन फ्रैंसिस्को एक निष्क्रिय शहर हो सकता था लेकिन इस शहर ने ऐसी कहानियाँ पहले भी सुनी थीं. पहाड़ियों में सोने की खोज को लेकर यहाँ कई बार अफवाहें उड़ीं थीं, लोग बड़ी-बड़ी डींगें मारते थे और कुछ लोग तो सफेद झूठ बोलते थे.

इस नई कहानी के तथ्य साधारण से थे. यह कहानी शुरु हुई एक बढ़ई, जेम्स मार्शल के साथ. पूर्व में स्थित एक नदी पर वह एक आरा-घर बना रहा था.

मार्शल अधिक पढ़ा-लिखा न था लेकिन वह मूर्ख नहीं था. 24 जनवरी 1848 के दिन वह नदी के तल पर खुदाई कर रहा था.

नदी तल पर उसे एक चमकता हुआ पीला पत्थर दिखाई दिया जिसका आकार अँगूठे के नाखून के बराबर था.

सोना, मार्शल ने सोचा, या फिर आयरन पायराइट, जो सोने जैसा दिखता तो है, लेकिन सोने से अधिक नाज़ुक होता है? कूटने पर वह पत्थर चपटा सा हो गया पर टूटा नहीं-जो कि अच्छा संकेत था. लेकिन मार्शल को बहुत काम था. उसने वह पत्थर अपनी हैट में छिपा कर रख लिया और काम में लग गया.
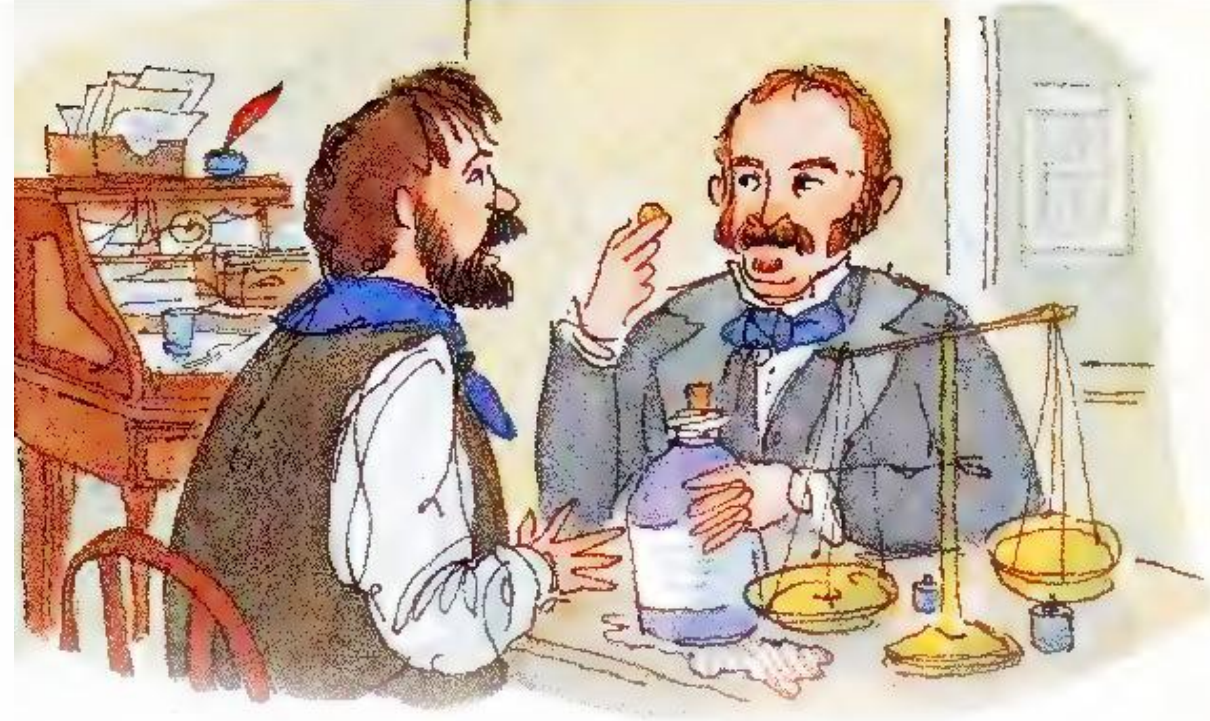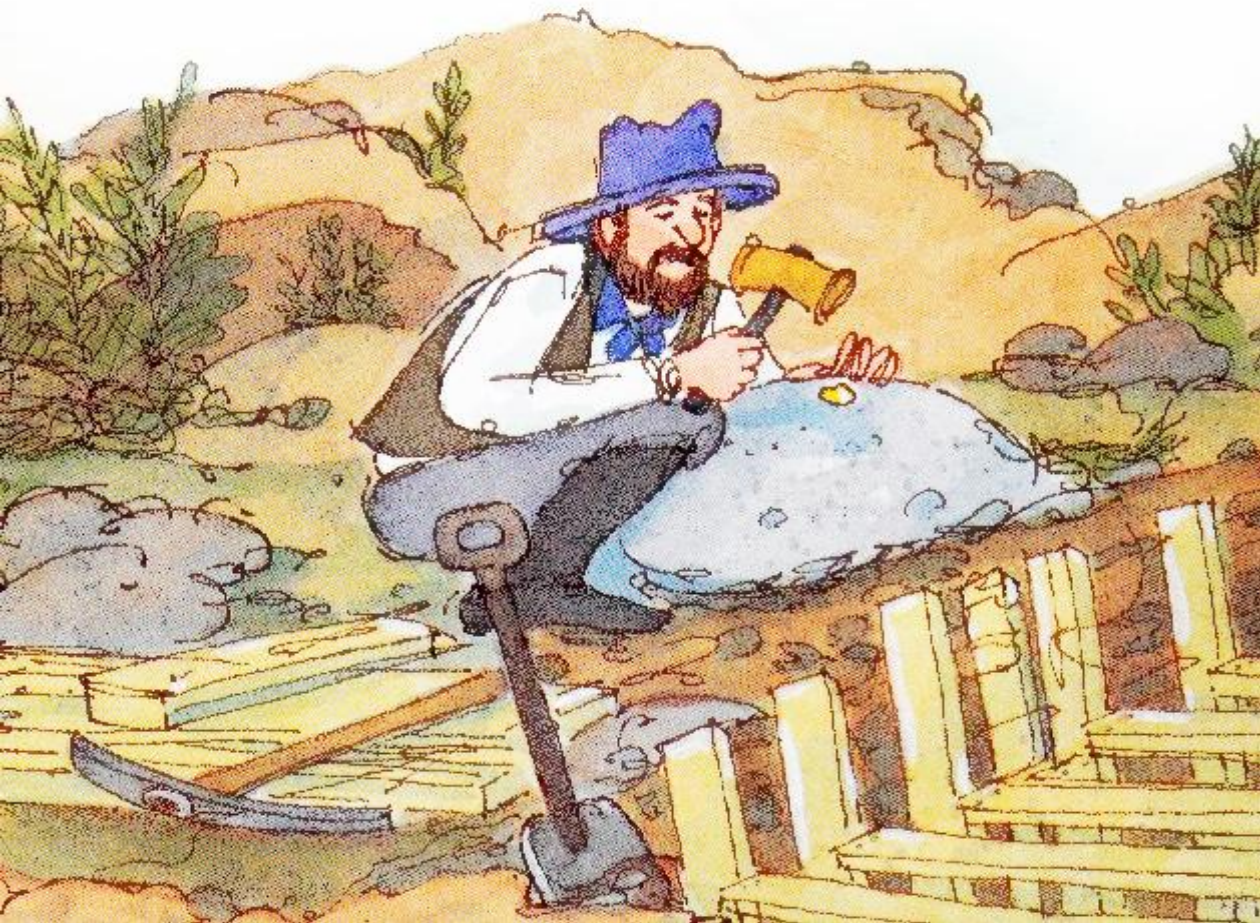
बाद में घोड़े पर सवार होकर वह अपने स्वामी, ज़ॉन ए सट्टर से मिलने सट्टर-किले में आया. सट्टर एक किसान, एक व्यापारी और एक फर्र-ट्रैपर था. लेकिन वह किसी भी पेशे में सफल न हुआ था.

सट्टर और मार्शल ने पीले पत्थर की ध्यान से जांच की. उन्होंने उसे काट कर देखा कि क्या वह सोने की तरह नर्म था. वह नर्म था. यह जांचने के लिए कि क्या तेज़ाब लगाने से उसकी चमक कम होगी, उन्होंने उस पर तेज़ाब लगाया. उस टुकड़े की चमक कम न हुई. फिर उन्होंने उसे उन चीज़ों के साथ तोला जो सोने से हल्की होती हैं.

हर जांच से यह प्रमाणित हुआ कि वह सोना ही था.

सट्टर ने मार्शल से कहा कि सोने की खोज को गुप्त रखे. उस सोने के टुकड़े का कोई खास महत्व नहीं था लेकिन वह श्रमिकों को अपने काम से भटका सकता था.

लेकिन ऐसे समाचार को अधिक समय तक गुप्त रखना संभव न था. सट्टर के कामगारों को शीघ्र ही पता चल गया कि मार्शल को नदी के तल पर सोना मिला था. रविवार के दिन जब उनकी छुट्टी होती थी वह सोने के टुकड़े और सोने की धूल की खोज करने लगे थे. कुछ कामगारों ने एक घंटे में एक महीने की आय के बराबर सोना ढूँढ कर इकट्ठा कर लिया था.

1848 की वसंत के आते-आते इस खोज को लेकर कई कहानियाँ सैन फ्रैंसिस्को, जहाँ लगभग 800 लोग रहते थे, पहुँच गईं. खदान में काम करने वाले डींगें मार रहे थे कि उन्होंने चट्टानों को खुरच कर सोना इकट्ठा कर लिया था. एक व्यक्ति को तो टैंट लगाने के लिए ज़मीन में गड्ढा खोदते समय सोने का टुकड़ा मिला था जिसका मूल्य 50 डॉलर था.

इन कहानियों में क्या कोई सच्चाई न थी? कई लोगों ने ऐसा सोचा और सोना पाने की ललक हर ओर फैलने लगी.

वकीलों ने अपने मुवक्किल छोड़ दिए और सैनिक अपने चौकियों से भाग गए. अध्यापकों के भाग जाने से स्कूल बंद हो गए. फिर नगर का मेयर लापता हो गया. कोई भी शैरिफ के पास अपनी शिकायत न कर सकता था क्योंकि वह स्वयं भी जा चुका था.

जून के अंत तक सैन फ्रैंसिस्को लगभग वीरान हो गया था. स्टोर्स खाली हो गए थे. हवा में दरवाज़े झूल रहे थे. गलियों में कुत्ते घूमते थे और उनकी परछाई ही उनका साथ देती थी. ऐसी प्रतीत होता था कि हर कोई नगर छोड़कर पहाड़ियों की ओर चला गया था.
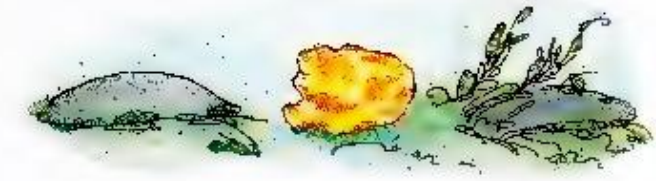
2
पश्चिम की ओर

सन 1848 की गर्मियों में समाचार धीरे-धीरे पूर्व की ओर फैलने लगा. समाचार घोड़ों पर सवार होकर घास के मैदानों के पार गया, स्टीम-बोट के द्वारा मिस्सपी नदी के साथ गया और समुद्री जहाज़ों के द्वारा दक्षिण अमरीका पहुँच गया.

आरंभ में पूर्व के लोगों पर इस खबर का अधिक प्रभाव न पड़ा. कोई नहीं जानता था कि यह कहानियाँ सच थीं या नहीं. गप्प हांकना आसान था और कैलिफोर्निया बहुत दूर था.

अधिकांश अमेरिकी कैलिफोर्निया के बारे में कुछ न जानते थे. मैक्सिकन वॉर की समाप्ति के बाद कुछ माह पहले ही कैलिफोर्निया अमरीका का एक भाग बना था. वहाँ की जनसंख्या बहुत कम और बिखरी हुई थी-यह आबादी देशी जनजातियों, मैक्सिकन लोगों और अमरिकी पायनियर्स का मिश्रण थी.
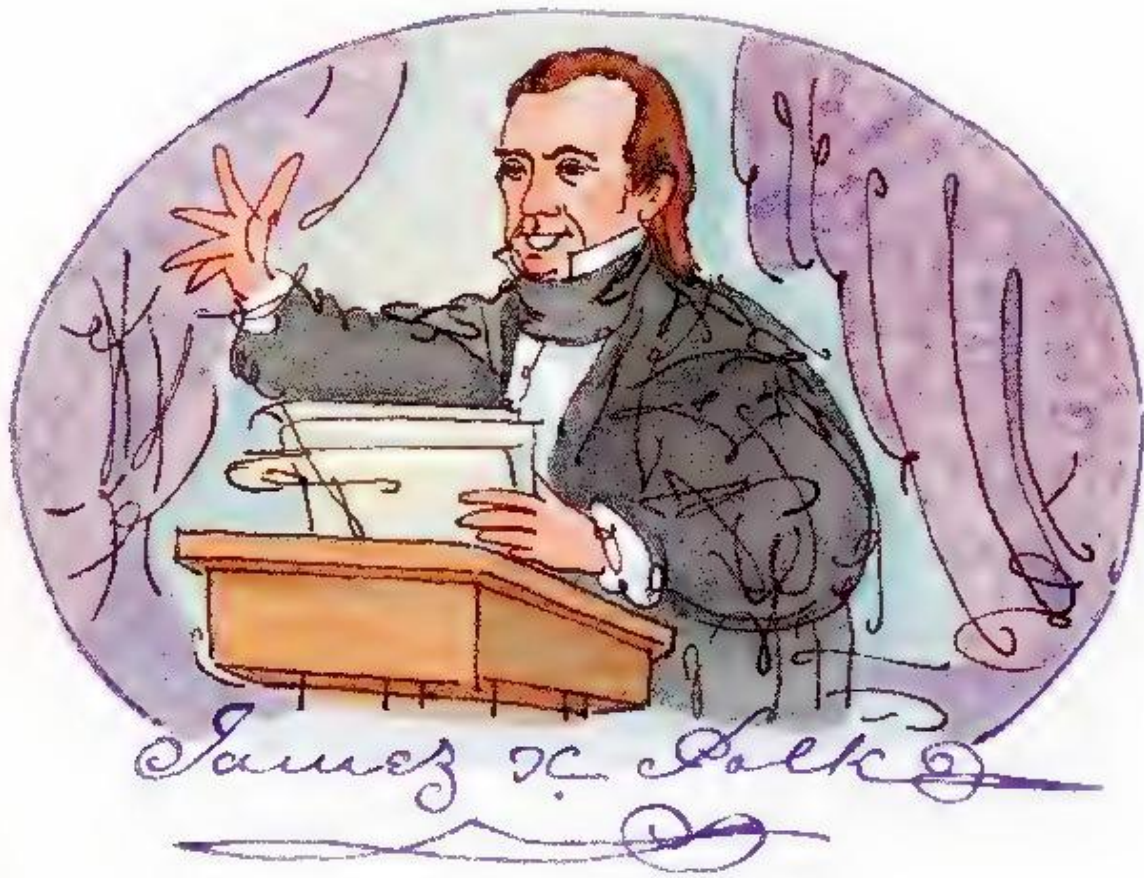
लेकिन जल्दी ही हर कोई कैलिफोर्निया के बारे में सोच रहा था. नवंबर आते-आते नयू यार्क के समाचार पत्रों में सोने को लेकर कहानियाँ छपने लगी थीं. ऐसा कहा जाने लगा कि वहाँ की गलियाँ सोने की बनी थीं और बड़े सेबों के आकार के सोने के टुकड़े ज़मीन पर पड़े मिलते थे.

फिर दिसंबर में राष्ट्रपति जेम्स पोल्क ने कांग्रेस को सोने की खोज के बारे में जानकारी दी. सेना और सरकारी अधिकारियों की रिपोर्टों के आधार पर उन्होंने कहा कि सोने की विशाल खदानें मिली थीं और उनमें इतना सोना था कि विश्वास नहीं किया जा सकता था.

सब को विश्वास हो गया. जिन लोगों को समाचार पत्रों पर भरोसा नहीं था, उन्हें राष्ट्रपति पर विश्वास था. राष्ट्रपति तो सच जानते होंगे, ऐसा उनका मानना था.

अब कैलिफोर्निया ऐसी जगह थी जहाँ हर कोई जाना चाहता था. सन 1848 में स्टोर क्लर्क को या खेत में काम करने वाले मज़दूर को सप्ताह में सात डॉलर मिलते थे. सोने की खदान में काम करने वाला व्यक्ति इससे चार गुणा पैसे नाश्ते और लंच के अंतराल में पा सकता था.

सब बहुत आसान दिखाई पड़ रहा था. कैलिफोर्निया में कुछ माह बिताओ और सोने से भरी थैलियाँ लेकर लौट आओ. हज़ारों लोग जिन्हें इस बात पर विश्वास था पुरुष थे और उनमें से अधिकांश युवा थे, यद्यपि एक नब्बे वर्ष का स्वतंत्रता सेनानी भी इनमें था. बहुत कम लोग अपनी पत्नियों या बच्चों के साथ आए थे क्योंकि लंबे समय तक वहां रुकने की उन लोगों की योजना न थी.

लेकिन सबसे पहले तो खनिकों को कैलिफोर्निया पहुँचना था. एक आशावादी आविष्कारक ने तो एक उड़ने वाली मशीन पर यह यात्रा पूरी करने का प्रस्ताव रखा था. लेकिन गुब्बारे की सहायता से उड़ने वाली उसकी मशीन ज़मीन से ऊपर उठ ही न पाई.

पूर्व में रहने वालों का पसंदीदा तरीका समुद्री जहाज़ से जाने का था. जहाज़ दक्षिण अमरीका से घूम कर सैन फ्रैंसिस्को जाते थे. सैंकड़ों छोटे-बड़े जहाज़ इस काम में लगे थे. 15000 मील लंबी यात्रा छह माह से लेकर एक साल में पूरी होती थी.

अधिकांश जहाज़ लोगों से खचाखच भरे होते थे. एक केबिन में इतने लोग सफर करते थे कि उन्हें खड़े-खड़े ही सोना पड़ता था. कई बार सब यात्री एक ही नगर से होते थे और एक-दूसरे को जानते थे. लेकिन अकसर वह अजनबी हुआ करते थे और एक-दूसरे से सतर्क रहते थे.

इतनी लंबी यात्रा में कई यात्रियों को मतली होने लगती थी और वह कुछ खा न पाते थे. जो बीमार न पड़ते थे वह अधिक भाग्यशाली न थे. खाने के लिए अजीब चीज़े मिलती थीं. खाने में अकसर फफूंद लगी ब्रेड होती थी.
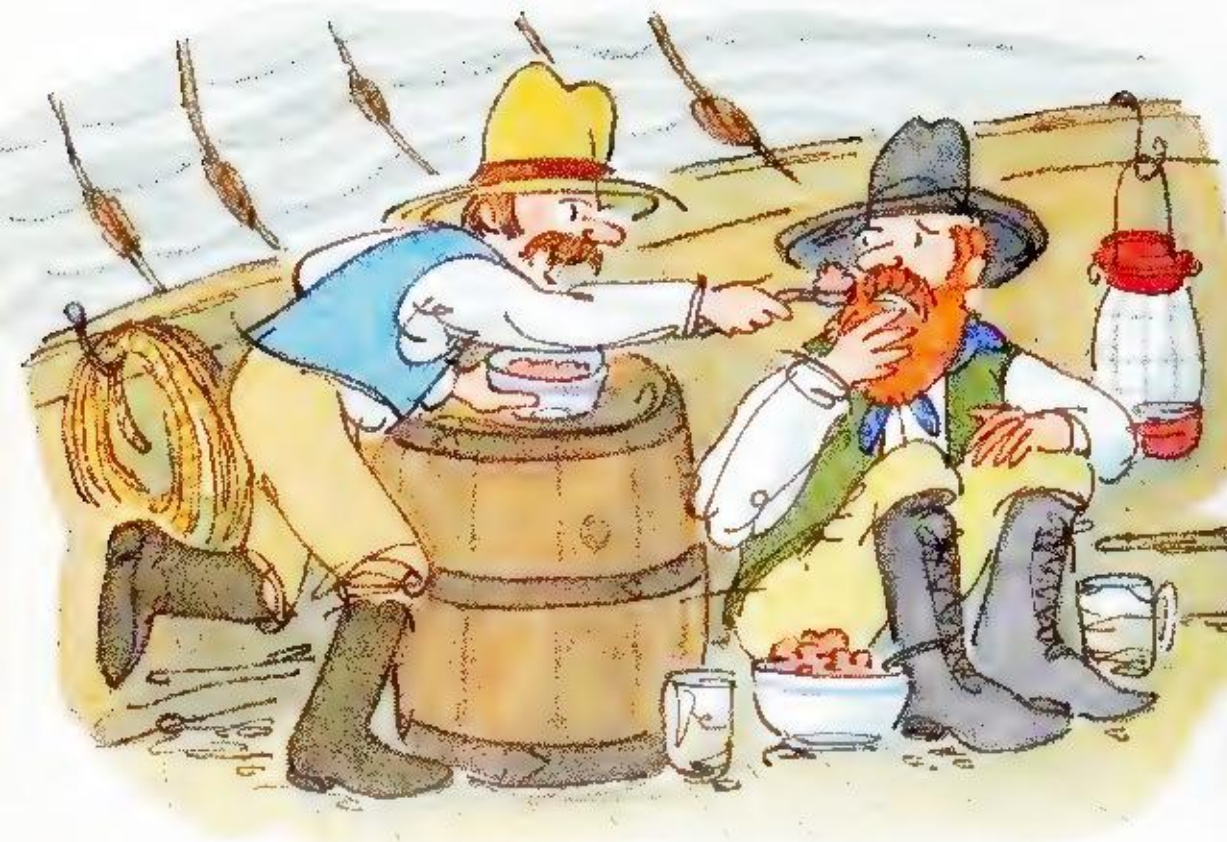
एक यात्री ने लिखा था कि उसकी पसंदीदा खाना वह चीज़ होती थी जिसपर शीरा लगा होता था जो फफूंद को ढक देता था और कीड़ों को मार डालता था.

यात्रा समाप्त होते-होते अधिकांश यात्री बुरी तरह थक हुए, बीमार, भूखे होते थे और नहाने की ज़रुरत महसूस करते थे. कइयों ने अपनी सारी बचत इस यात्रा पर खर्च कर दी होती थी. कइयों का स्वास्थ्य खराब होता था लेकिन सैन फ्रैंसिस्को खाड़ी देखते ही सब अपनी तकलीफ भूल जाते थे.

मध्य-पश्चिम के लोग धरती मार्ग से यात्रा करना पसंद करते थे. मिस्सूरी से यह यात्रा 1800 मील की थी जिसे बैल या घोड़ा गाड़ियों द्वारा पूरा किया जाता था हालांकि एक व्यक्ति ठेले पर अपना सामान लाद कर पैदल ही सारे रास्ते चलता आया था. एक साधारण गाड़ी दस फुट लंबी और चार फुट चौड़ी होती थी और उसे बैल या खच्चर खींचते थे. गाड़ियों के रेले में कुछ गाड़ियाँ या दर्जनों गाड़ियाँ हो सकती थीं.

गाड़ियों का मालिक सबसे आगे वाली गाड़ी में होता था और वो सभी झगड़ों का निपटारा भी करता था.

वह यात्रियों में काम भी बांटता था-लकड़ी इकट्ठा करना, पानी लाना, रात में पहरा देना, खाना बनाना.

एक गाड़ियों की ट्रेन का मालिक का नियम था कि यात्री सप्ताह में एक बार अपना जांघिया अवश्य बदलें और नहाने के लिए अपने साथ तीन पाउंड साबुन भी रखें. यात्रा के दिन लंबे, धूल भरे और गर्म थे. रास्ता ऊबड़-खाबड़ था.

सांपों, भालुओं और इंडियंस से बचने के लिए यात्री हथियार लेकर चलते थे. लेकिन इन खतरों के बजाय, बंदूकों के गलत उपयोग से अधिक लोग मरते थे.

यात्रा में बड़ी संख्या में लोग हैज़ा की बीमारी से मरते थे. यह रोग पानी में पाए जाने वाले जीवाणुओं के कारण फैलता था.

यह जीवाणु नदियों और कूओं के पानी द्वारा लोगों तक पहुँच जाते थे और रोग बड़ी तेज़ी से फैलता था. कभी-कभी तो कोई आदमी सुबह बीमार पड़ता था और रात होते-होते उसकी मौत हो जाती थी. सन1849 की वसंत और गर्मियों में हैज़ा के कारण सोने की खोज करने आए हज़ारों लोग मारे गए थे.

कैलिफोर्निया जाने वाले तीसरे रास्ते पर सबसे कम समय लगता था, अगर सब कुछ सही होता था. लेकिन अधिकतर समय सब सही नहीं होता था. यात्री नावों में सवार होकर मध्य अमरीका जाते थे. फिर साठ मील पैदल चल कर वह पनामा को पार करते थे और वहाँ से दूसरी नाव में बैठ कर कैलिफोर्निया पहुँचते थे.

इस रास्ते में समुद्री यात्रा छोटी थी इसलिए इसमें खतरे नहीं थे. लेकिन ज़मीनी यात्रा पेचीदा थी. पनामा के जंगलों में बहुत गर्मी थी और मच्छरों की भरमार थी जिनके काटने से मलेरिया हो जाता था. मलेरिया जानलेवा रोग था.

जंगल में फ्लैमिंगो, तोते और कई प्रकार के बंदर थे. लेकिन अधिकांश यात्री इतनी जल्दी में होते थे कि यह सब देख न पाते थे.

चाहे वह समुद्री रास्ते से आए थे या वैगन-ट्रेन पर, सन1849 तक लगभग 80000 लोग कैलिफोर्निया पहुँच गए थे. यह वह आशावादी लोग थे जिन्होंने अपने जीवन की सबसे कठिन यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की थी. कैलिफोर्निया पहुँच कर वह खुशी से मुस्करा सकते थे एक-दूसरे से हाथ मिला सकते थे. उन्हें लग रहा था कि उनकी सब परेशानियाँ दूर हो गई थीं.

3
खनिकों का जीवन

सोने की खोज में आए अधिकांश लोग बिना सोच-विचार किए कैलिफोर्निया आ गए थे. कुछ लोग घर की सब सुविधाएं अपने साथ ले आए थे: लकड़ी की मेज़-कुर्सियाँ, सुंदर तश्तरियां और क्रिस्टल लैंप्स. कुछ लोगों ने सूझबूझ से काम लिया था. वह रेनकोट, भारी जूते, कैनवस के टैंट और खाना पकाने के लिए बर्तन साथ लाए थे.

लेकिन सोने की खान में खुदाई कैसे की जाती है यह बात कोई नहीं जानता था.

और किसी को इस बात की परवाह भी नहीं थी. हर कोई खनिकों की सफलता की कहानियाँ सुन कर आश्चर्यचकित था. एक खनिक एक पहाड़ी से नीचे गिरा, जहाँ वह गिरा वहाँ खोदने पर उसे सोना मिला. एक अन्य ने अपने गधे को घास चरते देखा जिसके साथ सोने के कण चिपके हुए थे.

कहानियों के अनुसार सन1849 में पाये जाने वाले सोने का सबसे बड़ा टुकड़ा 161पाउंड का था जिसकी कीमत 38000 डॉलर थी. लोगों को सब संभव लगता था.

समझदार लोग सैन फ्रैंसिस्को में ज़्यादा समय न बिताते थे, वहाँ पर होटल के छोटे से कमरे का किराया 1800 डॉलर प्रति माह था, इतने पैसे में तो पूर्व में एक नया घर मिल जाता था. एक बिल्ली की कीमत 8 से 12 डॉलर थी.

आशावादी खनिक जल्दी ही पहाड़ियों की तीन दिन की यात्रा पर निकल पड़ते थे. वहाँ पर वह पहाड़ी नदियों में सोने की खोज शुरु कर देते थे. एक नए खनिक ने एक पुराने खनिक को एक पेड़ की छाल से सोने के एक टुकड़े को निकालते देखा तो आश्चर्यचकित हो गया. अपना भाग्य आज़माने के लिए वह एक निकट के देवदार के पेड़ पर आधी ऊँचाई तक चढ़ गया था, तभी पुराना खनिक उस पर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा था.

हर खनिक सोने के लिए खुदाई करने से पहले खुदाई करने वाली जगह पर दावा करता. ऐसा करने के लिए वह नदी के पास ज़मीन में चारों कोनों पर खूंटे गाड़ देता.

इस ज़मीन पर दावा बनाए रखने के लिए वह लगातार खुदाई करता रहता. अगर ज़मीन के किसी टुकड़े पर सप्ताह पर दावा करने वाला खुदाई न करता तो कोई भी उस ज़मीन पर दावा कर सकता था-सिर्फ खनिक के बीमार होने पर ऐसा न किया जाता था.
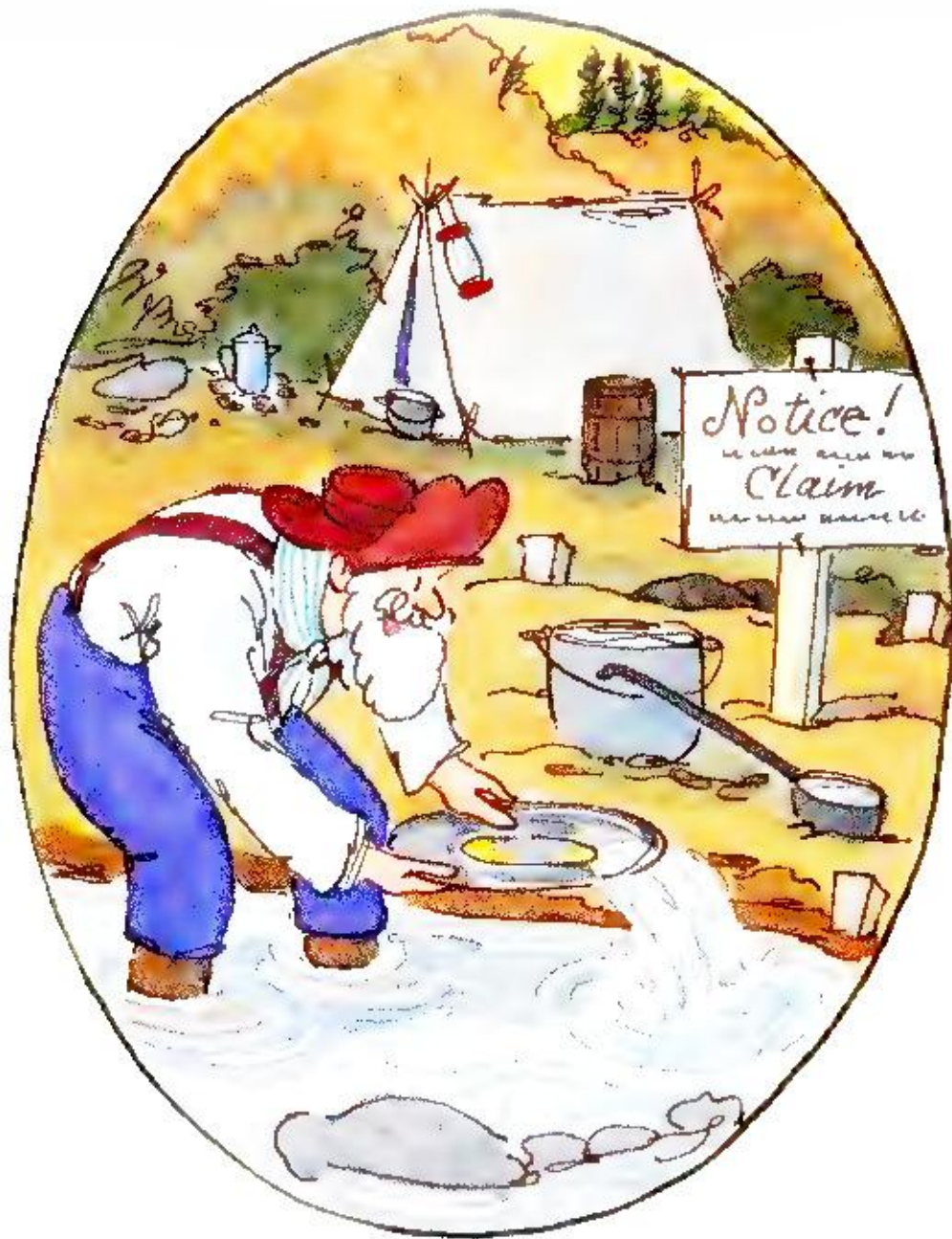
एक खनिक का दिन बहुत सुबह शुरु हो जाता था. उठने के बाद तैयार होने में वह बिलकुल समय न लगाता था क्योंकि वह कभी कपड़े बदलता ही न था. बिस्कुट, मांस और कॉफी का नाश्ता कर वह नदी की ओर चल देता था.

अगर खनिक अकेले काम कर रहा होता तो ठंड से पांव को बचाने के लिए वह ऊँचे जूते पहन कर पानी में खड़ा हो जाता. बहते हुए पानी में से वह किसी बर्तन से रेत निकालता. यह वही बर्तन होता जिसमें अकसर वह खाना भी पकाता. फिर वह रेतीले पानी को बर्तन में घुमाता.

रेत और मिट्टी बर्तन के किनारों पर इकट्ठी हो जाती. सोने के भारी कण बर्तन के बीच में इकट्ठे हो जाते. खनिक बर्तन को खाली कर फिर रेतीले पानी से भर लेता.

कुछ खनिक टीम बना कर सोने की खोज करते थे. एक के बजाय तीन लोग मिलकर रॉकर या लॉग टॉम की सहायता से अधिक रेत को छान सकते थे.

रॉकर लगभग तीन फुट लंबा लकड़ी का एक डिब्बा था जिसे ऐसे ढांचे में रखा जाता था कि पालने समान उसे हिलाया जा सके. इसके अंदर जालियां लगी होती थीं ताकि सोने के कणों को छान कर अलग किया जा सके. एक आदमी बेलचे से मिट्टी उठा कर रॉकर में डालता था, दूसरा उस पर पानी फेंकता था और तीसरा उसे पालने की तरह हिलाता था.

लॉग टॉम उससे बड़ा डिब्बा होता था, लगभग आठ से चौदह फुट लंबा. इसके अंदर भी जालियां लगी होती थीं. लेकिन इसे हिलाया न जाता था. इसे बहते पानी में रखा जाता था.
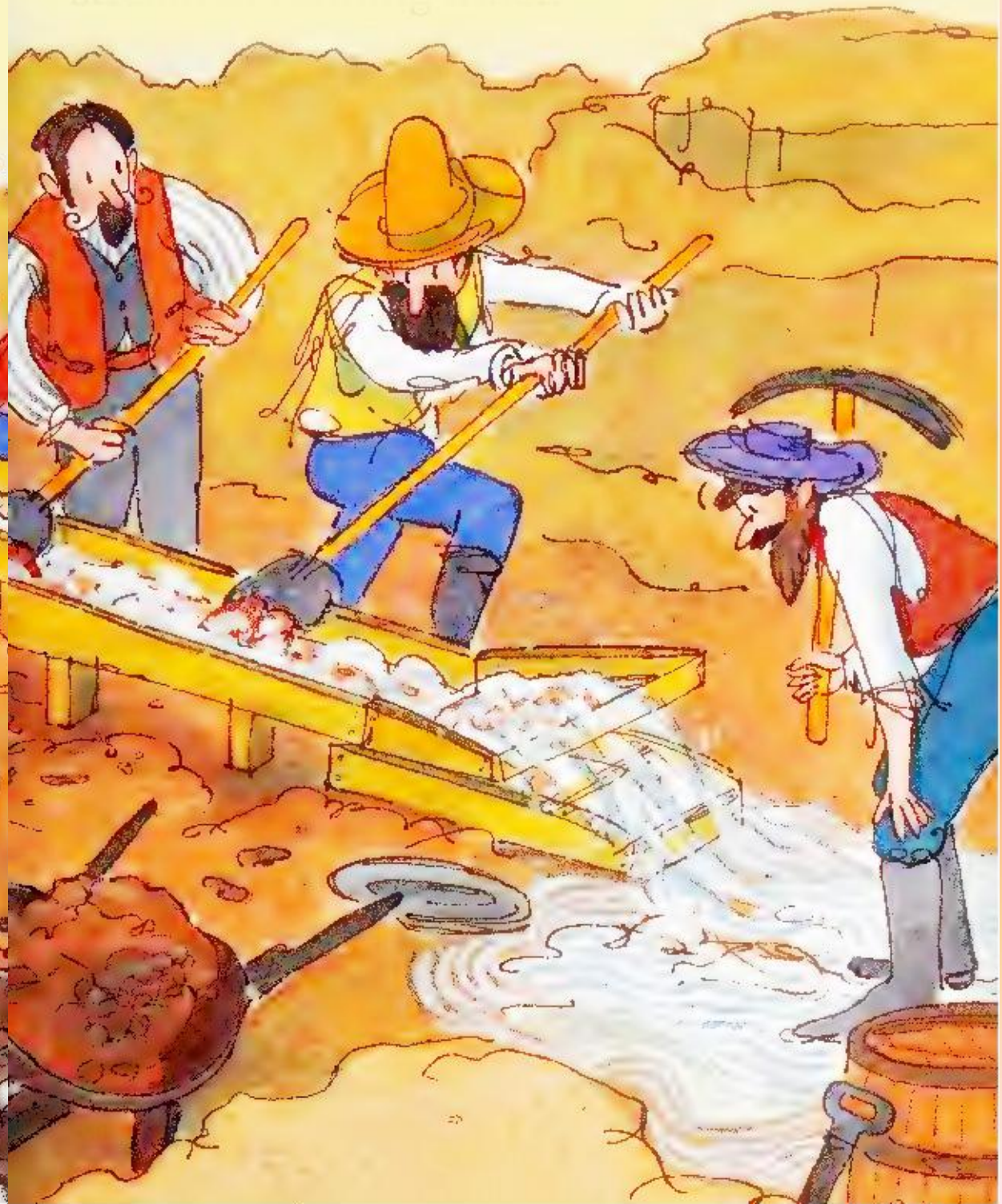
खुदाई करना, पत्थरों को तोड़ना, रॉकर या लॉग टॉम में रेत और पत्थरों को छानना बहुत थकाने वाला काम होता था. नदी का पानी भी बहुत ठंडा था. कई जगहों पर मच्छरों की भरमार थी, ऐसा कहा जाता था कि अगर कोई ध्यान न दे रहा होता तो मच्छर उसके सिर से उसकी हैट भी उठा कर ले जा सकते थे.

सूर्यास्त के बाद लोग लड़खड़ाते हुए अपने टैंट्स में वापस आ जाते थे. कुछ लोग खुले आकाश के नीचे ही सो जाते थे. कुछ बोर्डिंग हाउस्सि में खनिक, बिना तकिए और चद्दर के, लकड़ी के फट्टों पर सो जाते थे.

रविवार के दिन खनिकों को छुट्टी मिलती थी. वह अपने साफ और धुले हुए कपड़े पहनते थे. अपनी दाड़ी को साफ कर कंघा करते थे और चोटी की तरह बाँधते थे.

अगर कई खनिक एक जगह पर कुछ माह रुक जाते थे, तो उस जगह को एक नगर बुलाने लगते थे और नगरों का नाम भी रख देते थे- जैसे कि फेयर प्ले, बैडबग, ग्रिज़्ज़ली फ्लैट्स. शीघ्र ही कोई आदमी उस नगर में जनरल स्टोर खोल देता था. और कोई अन्य व्यक्ति सैलून खोल देता था.

हालांकि स्टोर चलाना खनन जितना रोमांचक न था, लेकिन यह कार्य अधिक भरोसेमंद था. अधिकांश चीज़ों का आदान-प्रदान सोने की धूल के साथ किया जाता था. एक चुटकी धूल एक डॉलर के बराबर थी. कई स्टोर कीपर धनी बन गए.

एक शर्ट 40 डॉलर और एक जोड़ी जूते बीस डॉलर बराबर सोने की धूल में बेचे जाते थे. पूर्व के अपेक्षा यह मूल्य बहुत अधिक था. चीनी, आलू और सेब का मूल्य 2 डॉलर प्रति पाउंड था जो साधारण मूल्य से पचास गुणा अधिक था. एक भूखे खनिक को एक रोटी के लिए 1 डॉलर और मक्खन लगी ब्रैड के लिए 2 डॉलर देने पड़ते थे.

समय बीतने के साथ लोगों को समझ आने लगा कि खनन का काम हर एक के बस की बात नहीं है. कुछ लोग एक-दो दिन की कठोर मेहनत के बाद हार मान लेते थे और कुछ लोग हार मानने से पहले, कई महीनों तक, भूख और हाथों के छालों को और कुचली हुई उंगलियों की पीड़ा सहते थे.

खनन का काम छोड़ने के बाद यह लोग किसी न किसी तरह कुछ पैसे कमा लेते थे. कुछ संदेशवाहक बन गए थे, किसी खनिक का पत्र डाक में भेजने के लिए पचास सैंट लेते थे और सैन फ्रैंसिस्को से पत्र लाने के लिए दो डॉलर लेते थे. थोड़ी बहुत औरतें जो वहां पर थीं वह खाना पकाने के लिए 30 डॉलर एक दिन का लेती थीं. एक आदमी किसी जुआ-घर में वायलिन बजा कर एक दिन में 14 डॉलर कमा सकता था.
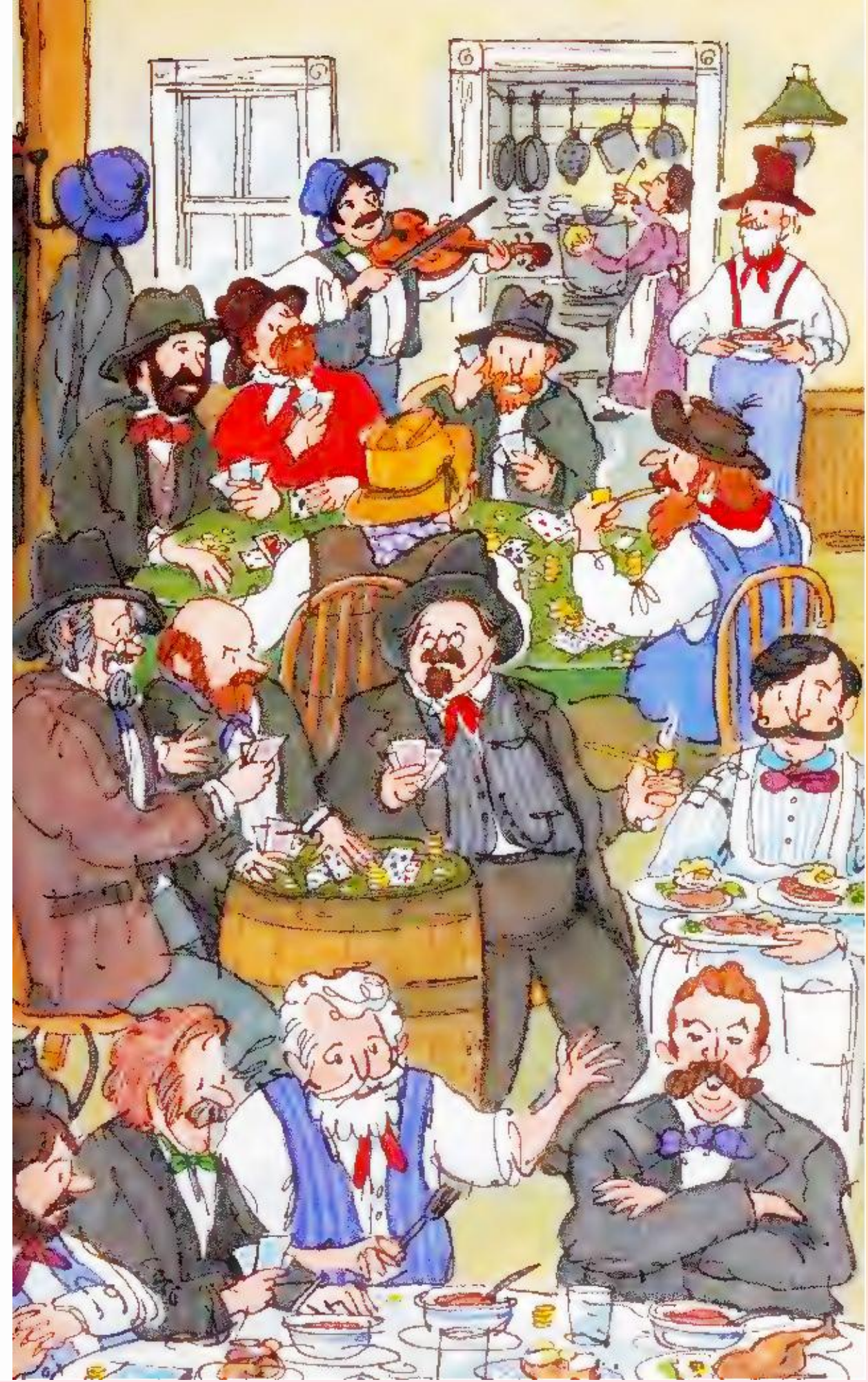
खनिकों ने इन अच्छी पगार वाली नौकरियों के लिए भी खनन का काम नहीं छोड़ा. सन 1849 के आरंभ में 6000 खनिक वहाँ थे लेकिन वर्ष समाप्त होते-होते यह संख्या कई हज़ार हो गई थी. हर किसी का यही प्रयास था कि कम से कम एक ऐसी सफलता मिल जाए कि वह एक हीरो के समान वापस लौट पाए.

4
जब उत्तेजना कम हुई

सन 1848 में आए खनिकों को कैलिफोर्निया की पहाड़ियाँ बहुत अच्छी लगी थीं. उनकी ज़रूरतें कम थीं और पर्याप्त मात्रा में सोना उपलब्ध था. न डकैतियाँ होती थीं और न ही सोने के लिए झगड़े होते थे. जब सर्दियाँ शुरु हुईं तो खनिकों ने अपने बचाये हुए पैसे सैन फ्रैंसिस्को के बैंकों में जमा कर दिए.

लेकिन सन 1850 में यह खनिक निराशा में सिर्फ अपने सिर और दाढ़ी खुजला कर रह गए थे. सैन फ्रैंसिस्को में सन 1849 में 600 नई इमारतें बनीं, लेकिन 1852 तक यहाँ की जन-संख्या बढ़ कर 34000 हो गई थी जो वाशिंगटन डीसी से भी अधिक थी. जिस ज़मीन की कीमत 16 डॉलर थी वह बढ़ कर 15000 डॉलर हो गई थी. अब हर खनिक को सतर्क रहना पड़ता था.

कोई ऐसा दिन न होता जब किसी हत्या और किसी डकैती का समाचार सुनने को नहीं मिलता था.

सन 1849 में एक आम खनिक एक दिन में 16 डॉलर कमाता था. लेकिन सन1850 में यह आय घट कर आधी हो गई थी. खदानें और नगरों का आधार खनिकों की सफलता थी, लेकिन नगरों में गरीब और हताश लोगों की भारी संख्या भी थी. सोने की खोज का समाचार सुन कर यूरोप, आस्ट्रेलिया, चीन और दक्षिण अमरीका से भी लोग आ गए थे. अधिकांश चीनी दक्षिण चीन से आए थे जहाँ फसल बरबाद हो गई थी नौकरियाँ कम थीं. चीन से आए लोग कैलिफोर्निया को गम शैन बुलाते थे जिसका अर्थ है सोने का पहाड़. भूखे किसानों को यहाँ आशा की किरण दिखाई दे रही थी.

कई लोगों के लिए कैलिफोर्निया निराशा की भूमि बन गया था. येलसुमनी और अन्य जनजातियों के लोग जो शताब्दियों से पहाड़ियों में रह रहे थे विस्थापित हो गए थे क्योंकि उन्हें अपनी भूमि से खदेड़ कर भगा दिया गया था.

इतना ही नहीं, जो लोग श्वेत नहीं था या अंग्रेज़ी न बोल सकते थे उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था. उन्हें अधिक कर देना पड़ता था और अपनी इच्छा से किसी भी जगह खनन करने की उनके पास स्वतंत्रता नहीं थी. कई नगरों में तो उनके प्रवेश पर भी रोक लगा दी गई थी.
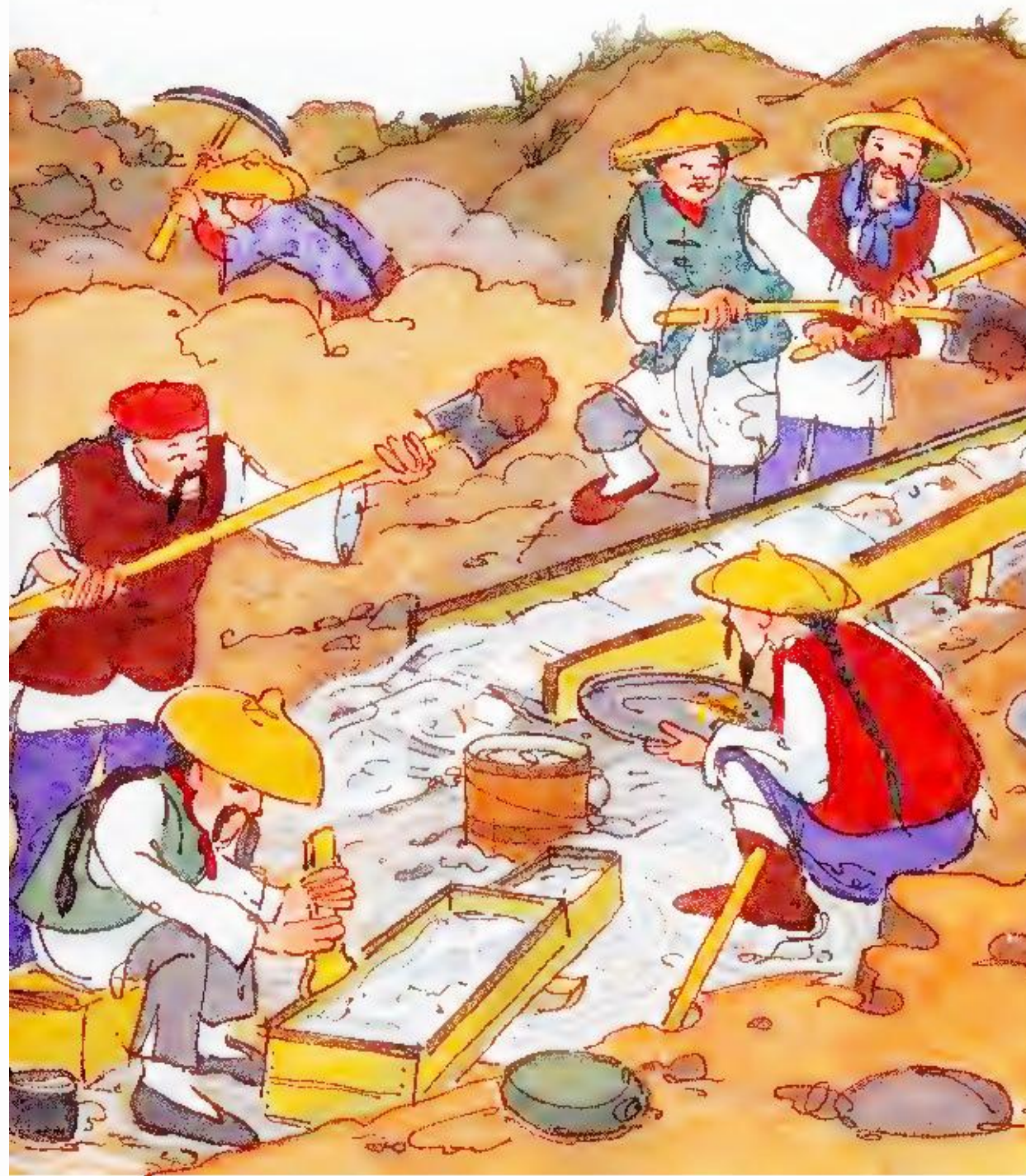
सरकार को हस्तक्षेप करना चाहिए थे लेकिन कैलिफोर्निया की पहाड़ियों में सरकार नाम मात्र को ही थी. पुलिस की भर्ती न हुई थी और थोड़े ही कानून बनाए गए थे. सेना तो यही सुनिश्चित करने में व्यस्त थी कि सैनिक सोने की खोज करने के लिए सेना से भाग न जाएं. कुछ अधिकारी थे जज और मेयर का भूमिका एक साथ निभा रहे थे. पर इनकी संख्या कम थी और अधिकार सीमित.

खदानों में सबसे गंभीर अपराध खदानों पर दावे का था. हत्या के अपराध दूसरे नंबर पर आते थे. जब कोई अपराधी पकड़ा जाता था खनिकों में से ही जज और जूरी को चुन लिया जाता था. तत्काल मुकदमा चलाया जाता था. कैदखाने नहीं थे, इसलिए दोषी व्यक्तियों को तुरंत सज़ा दे दी जाती थी. एक बार एक चोर ने यह बताने से इंकार कर दिया कि उसने चुराया हुआ सोना कहाँ छिपा कर रखा था. उसे नंगी पीठ के सहारे एक पेड़ के साथ बाँध दिया गया.

तीन घंटे बाद जब मच्छरों के काटने से वह बेहाल हो गया, उसने सच बता दिया.

लेकिन यह न्याय भी सब के साथ एक समान न होता था. अगर कोई अमरीकन खच्चर चुराता तो उसे कोड़े मारे जाते थे. लेकिन अगर कोई मैक्सिकन चोरी करता तो, प्रमाण न होने पर भी, उसे फांसी पर लटका दिया जाता था.

सैन फ्रैंसिस्को में स्डिनी डक्स जैसे बदमाशों के गिरोह थे जो लोगों को आतंकित करते थे. जुलाई 1849 में एक गिरोह ने उस जगह हमला किया जहाँ चिल्ली से आए लोग रहते थे. गिरोह ने खूब लूटपाट की. कई लोग मारे गए और दर्जनों घायल हो गए.

लेकिन धीरे-धीरे परिवर्तन आया. सन 1849 की समाप्ति पर एक गवर्नर चुन लिया गया और नया संविधान बनाया गया. लगभग एक वर्ष बाद, 9 सितंबर 1850 के दिन कैलिफोर्निया अधिकारिक रुप से एक राज्य बन गया.

इस नए राज्य की कुल जनसंख्या थी 92000. सैक्रामेंटो सिटी, जिसकी स्थापना दो वर्ष के भीतर हुई थी और आगे चल कर इस राज्य की राजधानी बना था, एक फलता-फूलता नगर था.

कोई पर्यटक अगर लंबे समय के लिए सो जाता तो जागने पर पाता कि जितनी देर वह सोया रहा था उतने समय में एक नई इमारत खड़ी हो चुकी थी. यह बहुत ही उठा-पटक का समय था. हर दिन कानून बदल जाते थे.

जब दो लोग कोई सौदा कर के हाथ मिलते थे तो दोनों हाथ छुड़ा कर हाथ की उंगलियाँ गिनकर निश्चित कर लेते थे कि कोई उंगली गायब तो न थी.

इस बीच खनन का काम अधिक व्यवस्थित हो गया था.

सन 1851 आते-आते लोग नदियों पर बांध बनाने लगे थे ताकि नदियों के तल पर खुदाई की जा सके. कुछ लोगों ने पहाड़ियों में सुरंगें खोद ली थीं.

खनन का काम अब एक बड़ा व्यापार बन गया था. लेकिन हज़ारों खनिक अब भी अकेले ही नदियों के तल पर सोने की खोज कर रहे थे. उन्हें अभी पता न था पर इस तरह सोना पाने के दिन बीत चुके थे.

5
भविष्य की ओर

सन 1850 के बाद भी हज़ारों लोग सोने की तलाश में हर वर्ष कैलिफोर्निया आ रहे थे. वह वहीं रहने लगते थे चाहे उन्हें सोना मिले या न मिले. कैलिफोर्निया में जीवन रोमांचक था और असफल खनिक वहाँ से लौटना नहीं चाहते थे

सैन फ्रैंसिस्को में कई बार आग लगने की घटनायें हुईं लेकिन हर बार बड़ी तेज़ी से जली हुई इमारतें दुबारा बना ली गईं. सन 1850 के बाद लकड़ी की जगह पत्थरों और ईंटों का उपयोग होने लगा था. खाड़ी में फैले घाट भी पक्के बना दिए गए थे.

कुछ लोगों ने देखा कि जितना धन खदानों से कमाया जा सकता था उतना ही धन खनिकों से कमाया जा सकता था. चार्लस क्रॉकर ने सैक्रामेंटो में एक जनरल स्टोर खोला और समय बीतने के साथ वह कैलिफोर्निया का सबसे धनी आदमी बन गया.

कोलिस हटिंगटन सैक्रामेंटो में खनिकों को खुदाई करने के लिए बेलचे बेचता था, मार्क हॉपकिंस लोगों को लोहे को सामान बेचता था, और दोनों ने व्यापार, परिवहन और रियल एस्टेट से बहुत धन कमाया.

इसी काल में एक बर्तन बेचने वाला पश्चिम में स्थित न्यू यॉर्क से टैंट बनाने के लिए कपड़ा लेकर कैलिफोर्निया आया.

उसका नाम था, लिवाइ स्ट्रास. लेकिन उस समय टैंट्स की बाज़ार में खास मांग नहीं थी. लिवाइ स्ट्रास ने टैंट बनाने वाले कनवास के कपड़े से मज़बूत डैनिम की पैंट्स बनवा लीं और एक पैंट एक डॉलर में बेच दी. 1860 आने तक लिवाइ स्ट्रास की कंपनी में सैंकड़ों लोग काम करने लगे थे जो हर वर्ष हज़ारों पैंट्स और शर्ट्स सिल रहे थे.

सन 1850 में कैलिफोर्निया में 1500 से कम किसान थे. कैलिफोर्निया में अधिकांश खाद्‌य पदार्थ बाहर से मंगवाये जाते थे-चिल्ली से आटा आता था, सब्ज़ियाँ हवाई से आती थीं. पूर्व के वातावरण में फसलें उगाने का तरीका सीखने में किसानों को समय लगा. लेकिन वह जल्दी ही सब सीख गए. सन 1860 तक 20000 लोग खेती करने लगे थे, हर दिन नई भूमि पर खेती होने लगी थी.

पश्चिम की ओर परिवहन की सुविधा बड़ी शीघ्रता से बढ़ रही थी. सन 1869 में पूर्व तट को पश्चिम तट से जोड़ने वाली रेल शुरु हो गई थी. यह रेल यात्रा एक सप्ताह में पूरी हो जाती थी-बीस साल पहले इतनी तेज़ गति की कल्पना करना भी असंभव था.
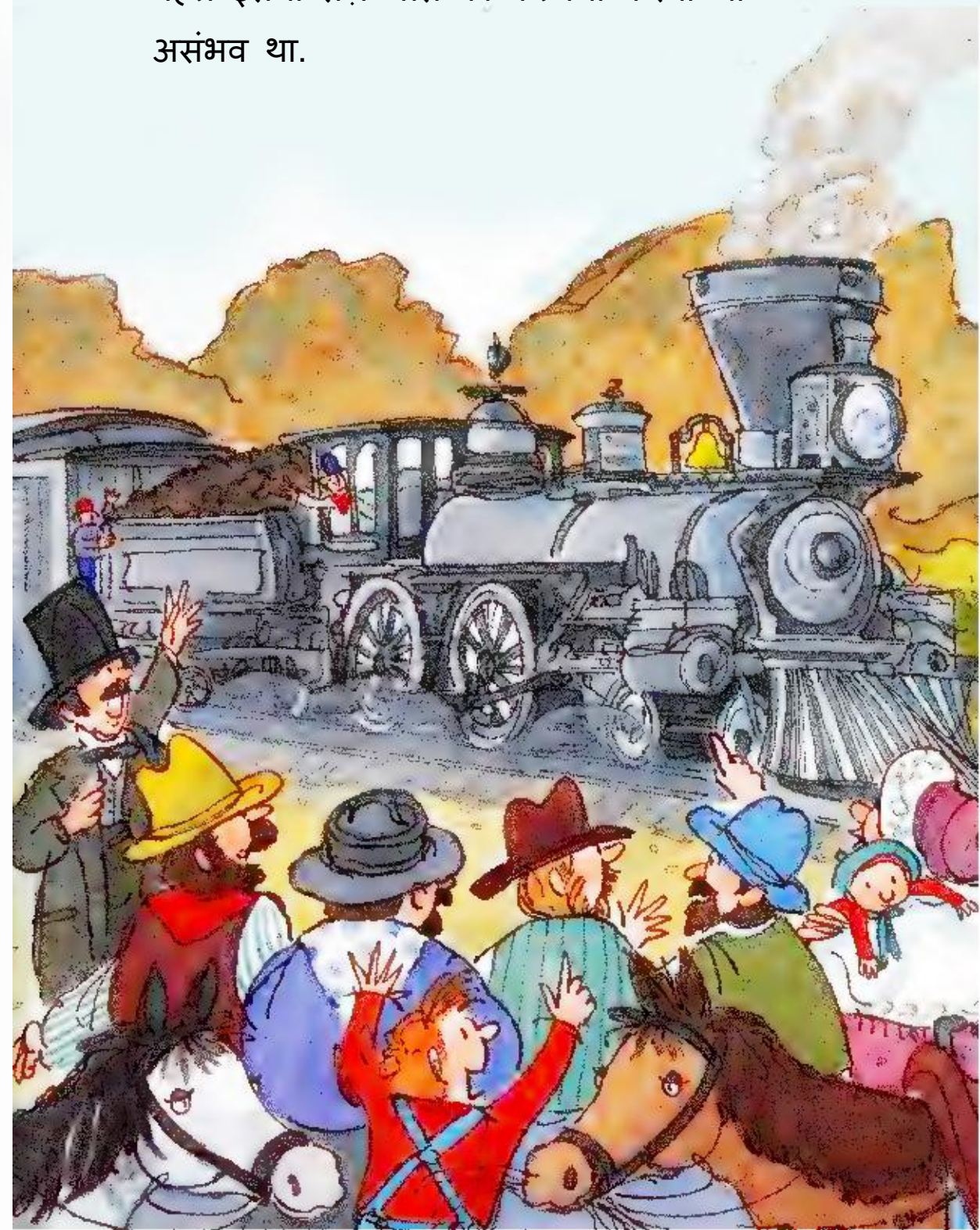
सन 1849 में आए खनिकों को धीरे-धीरे अहसास हुआ कि जितनी उम्मीद उन्होंने की थी उतना सोना उन्हें मिला नहीं था. न जेम्स मार्शल और न ही जॉन सट्टर सोना खोज कर धनी हो पाए. मार्शल को दुबारा कोई सोना न मिला और वह गरीब लोहार बन कर रह गया.
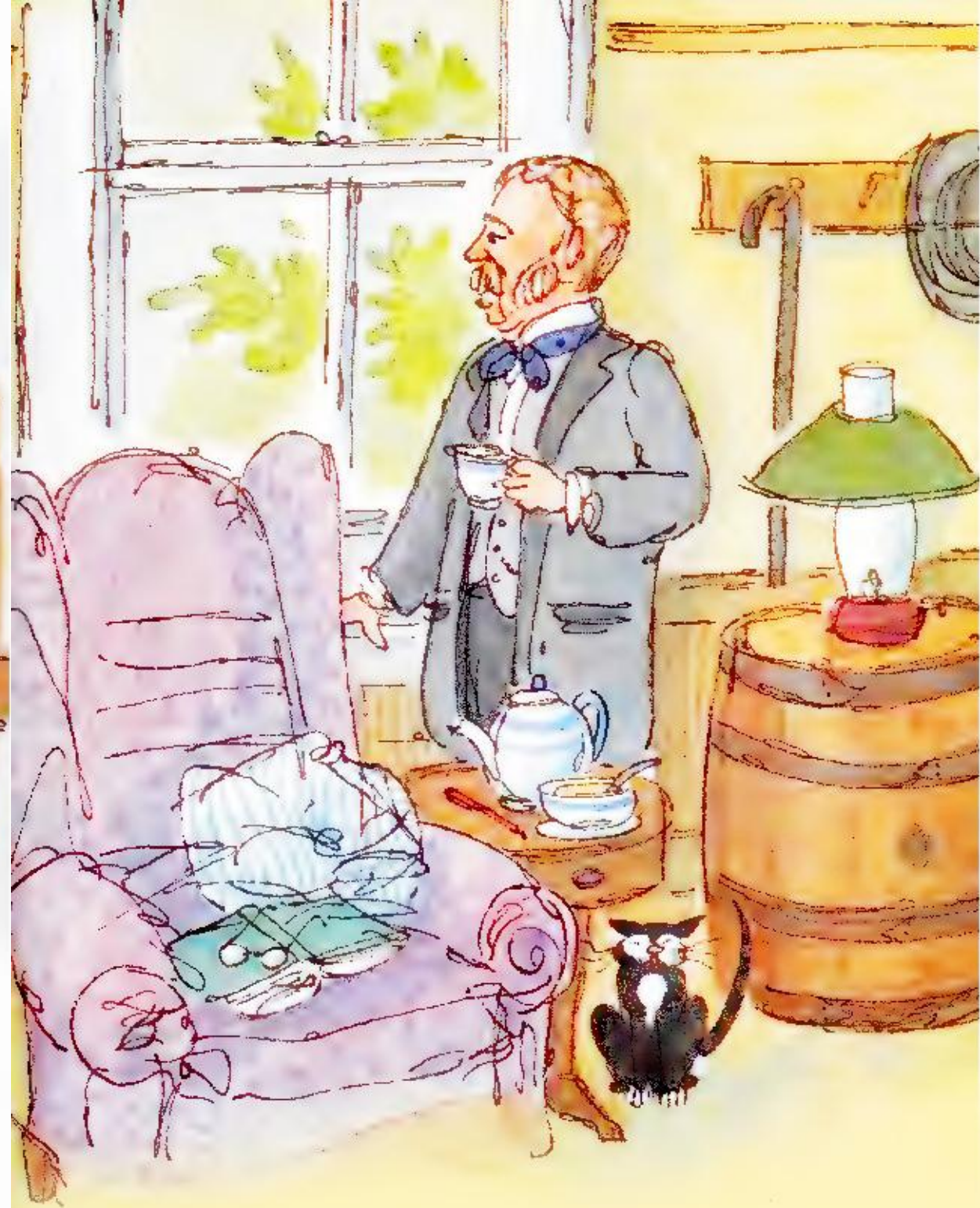
सट्टर ने कई बार धन कमाया और गंवाया और हार कर वह पूर्व वापस आ गया और जीवन के अंतिम वर्ष उसने पैनस्लिवानिया में बिताए.

लेकिन चाहे वह सफल हुए या असफल, इन खनिकों में एक बात समान थी, कैलिफोर्निया में आए हर एक व्यक्ति ने अमरीका के इस साहसिक अभियान में अपना योगदान दिया था.